एक पक्षी परोपकारी भी व हिसंक भी

अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान के निकट एक पक्षी पाया जाता है जिसका नाम है हनीगाइड (मधु मार्गदर्शक)। जीव विज्ञानी इसे *इंडिकेटर इंडिकेटर* कहते हैं। इसके बारे में प्रसिद्ध है कि यह मनुष्यों को मधुमक्खियों के छत्ते का रास्ता बताता है और जब मनुष्य उस छत्ते को तोड़कर शहद प्राप्त करते हैं, तो इस पक्षी को छत्ते में मौजूद इल्लियां खाने को मिल जाती हैं।

अब इस सहयोगी व्यवहार के बाद इसी पक्षी के बच्चों के क्रूर व्यवहार पर एक नज़र डालें। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के क्लेयर स्पॉटिसवुड ने पिछले कुछ वर्षों में इस व्यवहार का खुलासा किया है। उन्होंने देखा था कि दक्षिणी ज़ाम्बिया में ये मधु मार्गदर्शक पक्षी एक अन्य पक्षी (बी-ईटर) के घोंसले में अण्डे देते हैं। बी-ईटर्स आम तौर पर रेतीली मिट्टी में सुरंग खोदकर घोंसला बनाते हैं। स्पॉटिसवुड ने किसी तरह से इस घोंसले के अंदर कैमरे लगा दिए थे।

मादा मधु मार्गदर्शक ने चुपके से घोंसले में घुसकर अण्डे दे दिए। न सिर्फ वह अपने अण्डे वहां देती है बल्कि यदि पहले से बी-ईटर के अण्डे हुए, तो उन्हें अपनी चोंच से फोड़ भी देती है हालांकि वह सारे अण्डे नहीं फोड़ पाती। स्पॉटिसवुड ने पाया कि वह 67 प्रतिशत अण्डों को फोड़ पाई थी।

अब इस कथा का अगला चरण शुरू होता है। मधु मार्गदर्शक मादा घोंसले में जा-जाकर अपने अण्डों को सेती

भी रहती है। इन अण्डों में चूज़े पहले निकल आते हैं। बी-ईटर इन्हें पहचान नहीं पाती और भोजन ला-लाकर देती रहती है। एक-दो दिनों में बी-ईटर के चूज़े भी निकल आते हैं। इस समय मधु मार्गदर्शक के चूज़े निहायत हिंसक हो उठते हैं। वे बी-ईटर के चूज़ों पर चोंच से वार करते हैं, उन्हें चोंच से पकड़कर धोबी पछाड़ मारते हैं। ऐसा वे तब तक करते हैं जब तक कि बी-ईटर के चूज़े मर न जाएं। आपको यह पढ़कर कोयल की याद ज़रूर आई होगी। कोयल भी अपने अण्डे अन्य पक्षियों के घोंसलों में ही देती है।

बी-ईटर के चूज़ों को ठिकाने लगाने के बाद मधु मार्गदर्शक के चूज़े बी-ईटर मां से भोजन की मांग और ज़ोर-ज़ोर से करने लगते हैं। खूब खा-पीकर मोटे होकर वे जब उड़ने लायक हो जाते हैं, तब घोंसले से निकलते हैं, शहद ढूंढने में आपकी मदद का परोपकार करने को। ***(स्रोत फीचर्स)***